कर्मकांड एवं पौरोहित - एक वर्षीय डिप्लोमा पाठ्यक्रम

प्रथम प्रश्न पत्र (देवपूजा एवम मुहुर्त) 100 अंक

(क) देवपूजा प्रयोग **(20 अंक)**

कर्मकाण्ड का उद्भव एवं विकास

- शिखा बन्धन उसके उद्देश्य एवं महत्व
- यग्नोपवित के उद्देश्य एवं महत्व
- तिलक धारण के उद्देश्य एवं महत्व
- पवित्री धारण के उद्देश्य एवं महत्व
- आचमन एवं प्राणायम की संक्षिप्त जानकारी
- संकल्प के उद्देश्य एवं महत्व
- देवपूजा के प्रकार - पंचोपचार, त्रिशोपचार, षोडशोपचार
- आरती के महत्व एवं विधी
- पंचगव्य के औषधीय महत्व
- यज्ञ मे प्रयुक्त विविध अग्नी
- यज्ञ काष्ट एवं समिधा के प्रकार
- यज्ञ मे प्रयुक्त उपकरण का संक्षिप्त परिचय
- विभिन्न मण्डल एवं देवताओ का परिचय एवं यज्ञ मण्डप मे विभिन्न मण्डलो की दिशा
- आघार होम, श्रिष्टकृत होम, नवाहुति, बलिदान, पूर्णाहुति होम, वसोरधारा आदि का सामान्य परिचय
- देवपुजा में प्रयुक्त विभिन्न वेद मंत्र का सुक्तानुसार उल्लेख
- यज्ञ में होता, अध्वर्यु, पाठक, आचार्य ब्रम्हा, गाणपत्य आदि का परिचय
- नित्यकर्म सन्ध्या इष्टस्मरण, गुरुवन्दना कर्मांगवरुण पूजा भूमिपूजन दीपपूजन,
- आचमन तिलक न यजमान ,यजमान पत्नी) ग्रन्थि बन्धन मंत्र यज्ञोपवित्धारण प्रयोग और नमस्कार
- दिगरक्षण (मन्त्रात्मक एवं पोराणिक) शंखपुजा गरुडघण्टी पुजन भद्रसूक्त पाठ गणपति ध्यान,
- गणपति द्वादश नाम स्मरण, कर्मसंकल्प, गणपत्यादि पंचदेवपूजन, विशेषार्धदान, गौर्यादि षोडश
- मातृकापूजन, श्रयादिसप्तवसाधारा पूजन, आभ्युदयिक नान्दीश्राद्ध प्रयोग, आचार्य ब्रहाऋत्विग
- वरण कलशस्थापन पचपल्लव सप्तमृत्तिका, पंचरत्न, सर्वोषधि आदि का नाम परिचय
- पुण्याहवाचन, हवनवेदी निर्माण प्रकार, कुशकण्डिका, पञ्चभु संस्कार, सूर्यादिनवग्रहपूजन शिवादि
- अधिदेव तथा अग्न्यादि प्रत्यधि देवपूजन व ब्रह्मादिपंचदेवपूजन।
- हेमाद्रि श्रवण प्रयोग - दशविधि स्नान सहित

(ख) शिख्यादि चतु षष्टि पद वास्तुभण्डल देवता स्थापन **(20 अंक)**

- दिव्य योगिन्यादि चतुःषष्टि योगिनीमण्डल पूजन, अजरादिक्षेत्रपाल पूजन, ब्रहमादिसर्वतोभद्रमण्डल देवता
- लिंगतोभद्रमण्डल देवतापूजन प्रतिमावस्त्रवेष्टन
- प्रधानप्रतियाघृतआलेपन, अग्न्युत्तारणविधि, प्रधान

- प्रतिमाप्राणप्रतिष्ठा प्रधान पुजा आह्वान आदिषोडशौप्चार पुजा , हवनारम्भ, प्रजापति आदि देवों के निमित्त आहुति, अग्नि पूजन, वारूणी पंचाहुति, आवाहित देवों का नाम मंत्र अथवा
- वैदिकमन्त्रहवन श्रीसूक्तहवन स्विष्टकृतहोम, इन्द्रादिदशदिक्पाल पूजन तथा बलिदान, क्षेत्रपाल पूजन एवं बलिदान होमान्त, उत्तरपूजन, सुव में उन्चास मरुद्गणपूजा, पुर्णाहूति निमित्त मृङनामाग्निपूजन, पूर्णाहूति वसोद्धाराहोम, भस्मधारण, अगन्योपस्थापन, यजमानअभिषेक, कामनापूर्तिसंकल्प, संसवप्राशन ब्रह्मग्रन्थिविसर्जन, प्रणीतापात्र के जल से यजमान अभिषेक, पवित्री का अग्नि में प्रक्षेपण प्रणीतान्युजीकरण, ब्रह्मा के लिए पूर्णपात्रदा बर्हिहोम, दक्षिणादान संकल्प, न्यूमातिरिक्तदोष परिहारार्थ, गौघास, कपोतादिकों के लिए धान्यदान संकल्प , दीन अनाथादिको के लिए दक्षिणा संकल्प आचार्यादिव्रती ब्राहाणो के लिए दक्षिणादान संकल्प , ब्राह्मणबटुक, कुमारी आदि के भोजन निमित्त भोजन संकल्प वैदिक आदि मन्त्र धान देवताओं की प्रचलित आरती मन्त्र पुष्पांजली , आशीर्वादग्रहण, देवविसर्जन एवं पुर: मांगलिक कार्यों में आगमन की प्रार्थना।

(ग) विविध मुहूर्तज्ञान- **(20 अंक)**

कर्मकाण्ड मे प्रयुक्त विभिन्न मुद्रा ज्ञान एवम उसका वैज्ञानिक महत्व
अवंकहडाचक्र ज्ञान, पंचाग परिचय , जन्माक्षर निर्माण विधि , इष्टकाल. सूर्यराशि अंश , लग्नराशि अंश , जन्मकुण्डली में ग्रहस्थापन प्रकार , चन्द्रकुण्डली, जन्माक्षर के अनुसार राशि ,राशिपति, नक्षत्र चरणानुसार नाम निर्धारण गण-नाडी-योनि एवं सूर्यराशिएवं नक्षत्रानुसार पाया , ज्ञान, चौघडिया मुहूर्त , राहूकालज्ञान, गोधूलि एवं अभिजित लग्न के मान का ज्ञान , गृहारम्भ, गृहप्रवेश, उपनयन, विवाह मुहूर्त , सूर्य गुरु एवं चन्द्रशुद्धि ज्ञान, देवप्रतिष्ठा, व्यापार प्रारंभ, वाहन क्रय, प्रसूतिस्नान, जलवा, चूडापहनने का मुहूर्त, वाद प्रस्तुत करने के वार एवं नक्षत्र का ज्ञान , चौल संस्कार (जडूला) विद्यारम्भ आदि समाजोपयोगि विभिन्न संस्कारों के मुहूर्त ।

जन्माक्षर निर्माण ज्ञान-
पंचांग साधन तिथि तथा नक्षत्रों की संख्याए , अक्षांश तथा रेखांश से सूर्यादय साधन। गुणमेलापक विधिज्ञान, कुण्डली मेलापक, शुभाशुभज्ञान, मांगलिक विचार, अनुष्ठान आरंभ ,सेवारम्भ, क्रय, विक्रय, ऋण लेने एवं देने का मुहूर्त, विभिन्न दिशाओं में प्रस्थान हेतु, यात्रा दिवस एवं वार का ज्ञान, सम्मुखादि चन्द्रवास, कूपारम्भ मुहूर्त पंचक ज्ञान, सिद्धि योग कुयोगादि परिचय, अग्निवास, भद्रावास शिववासज्ञान। इष्ट साधन, ग्रहस्पष्ट, लग्नस्पष्ट, राशि ज्ञान ।

जन्माक्षर निर्माण ज्ञान-
पंचांग साधन तिथि तथा नक्षत्रों की संख्याए , अक्षांश तथा रेखांश से सूर्यादय साधन। गुणमेलापक विधिज्ञान, कुण्डली मेलापक, शुभाशुभज्ञान, मांगलिक विचार, अनुष्ठान आरंभ ,सेवारम्भ, क्रय, विक्रय, ऋण लेने एवं देने का मुहूर्त, विभिन्न दिशाओं में प्रस्थान हेतु, यात्रा दिवस एवं वार का ज्ञान, सम्मुखादि चन्द्रवास, कूपारम्भ मुहूर्त पंचक ज्ञान, सिद्धि योग कुयोगादि परिचय, अग्निवास, भद्रावास शिववासज्ञान। इष्ट साधन, ग्रहस्पष्ट, लग्नस्पष्ट, राशि ज्ञान ।

प्रायोगिक- **(40 अंक)**
(क) प्रथम प्रश्न पत्र का "क" भाग पर आधारित पूजा पद्धतियों का प्रयोग, मण्डलादि तथा वेदी निर्माण करना जन्मकुण्डली निर्माण एवं संक्षिप्त फलादेश। मुहुर्त व्यापार आरम्भ , गृह प्रवेश, शिलान्यास, चौलकर्म आदि का मुहूर्त निर्धारण करना।
यज्ञहवन विधि, पुष्पांजलि मन्त्रों का लयबद्ध वाचन करना , बलिविधान प्रयोग का ज्ञान। अक्षांश-रेखांश का ज्ञान एवं लग्नस्पष्ट। जन्म समयानुसार जन्माक्षर बनाना तथा प्रतिष्ठित स्थानीय पुरोहितों के निर्देशन में सम्बन्धित विषय का प्रायोगिक अभ्यास एवं उसका परीक्षण।

सहायक ग्रन्थ -
1. ग्रह शान्ति
2. पंचांग ज्ञान-
3. विविध मुहूर्त
4. ब्रह्मनित्यकर्म समुच्चय एवम ब्रम्हनित्यकर्म प्रयोग
5. नित्यकर्मपूजाप्रकाश गायत्री पुरश्चरण प्रयोग
6. शीघ्र बोध

द्वितीय प्रश्न पत्र -सैद्धांतिक (व्रत उद्यापन विधि मंत्र एवं स्त्रोत पाठ) -100 अंक

(क) व्रतोद्यापन विधि **(20अंक)**

रामनवमी, जन्माष्टमी, विभिन्न एकादशी, प्रदोष, अनन्त चतुर्दशी, ऋषिपंचमी,
सत्यनारायण व्रत कथा, पूर्णिमा, गंगोदक पूजन, तुलसी विवाह एवं विभिन्न व्रत उद्यापन विधि ।

(ख) रुद्राष्टाध्यायी- सम्पूर्ण **(20 अंक)**

(ग) स्तोत्रपाठ **(20अंक)**

शिव, विष्णु, गणेश, लक्ष्मी, दुर्गा, सरस्वती, श्री राम, श्रीकृष्ण, तथा सूक्त, विष्णुसहस्रनाम,
गणेशाथर्वशीर्ष, सहस्रघट विधि, नवरात्र अनुष्ठान विधि, दुर्गासप्तशती का पाठ विधि एवं
रुद्राभिषेक एवं स्तोत्रों के यतिगतिलयबद्ध पाठ का अभ्यास व पारिभाषिक ज्ञान।

प्रायोगिक **(40अंक)**

(ख) रुद्रसूक्त, पुरुषसूक्त, नमक चमक का शुद्धोच्चारण करना ।
गणपतिअथर्वशीर्ष, दुर्गासप्तशती की सक्रादय स्तुति और नारायणी स्तुती का यति
गतिलयबद्ध शुद्धोच्चारण करना।

सहायक ग्रन्थ-
1. व्रतोद्यापन चन्द्रिका
2. रुद्राष्टाध्यायी
3. स्तोत्र रत्नावली

तृतीय प्रश्नपत्र- सैद्धांतिक(शांति ,वास्तु और संस्कार) (100 अंक)

(क) नक्षत्र शान्ति **(20अंक)**

मूलअश्लेषामघाज्येष्ठादिगण्डान्तनक्षत्रशान्ति, शिलान्यास विधि, वास्तुशान्ति, गृहप्रवेश पर्यन्त ।
महामृत्युंजय जपविधि महालक्ष्मीपूजन, कुबेरपूजन, तुलापूजा, बहीवसनापूजन,
सार्धनवचण्डीप्रयोग, जन्मदिवसपूजन।

(ख) संस्कार प्रकरण - उपनयन समान पर्यन्त। **(20अंक)**

विवाह संस्कार - वाग्दान (तिलक दस्तूर पूजा) लग्नपत्र लेखन, विनायक सांकडी पूजा,
स्तम्भ प्रष्ठिा (थामरोपन) वरवरण, विष्टर - पाद्य -अर्थ्य आचमन-मधुपर्क दानादि हस्तलेपन
(पीलाहाथ), कन्यादान, पाणिग्रहण, ग्रन्थिबन्धन प्रायश्चित होम, जया-अभ्यातान-राष्ट्रभृत,
पंचाहुति, लाजाहोम, सप्तपदी, वरकन्याप्रतिज्ञावचन, ध्रुवदर्शन, शाखोचार (मंगलाष्टक) सिन्दूरदान,
फेरपाटा।

(ग) अन्तिम संस्कार - श्राद्धविधि – **(20 अंक)**

पंचपिण्डदान क्रमशः
मृतस्थान, -द्वार-चतुष्पथ (चौराहा) विश्रामस्थल-श्मशान आदि।
शवदाह एवं मुखाग्निदान कपालक्रियाविधि । अस्थि संचय (फूल चुनना)
दसगात्र एवं नारायणबलिकर्म, सपिण्डीकरणश्राद्ध, पाक्षिक-मासिक-पाण्मासिक एवं
वार्षिकश्राद्ध पितृमेलन श्राद्ध शीशीपूजन, पवित्रीनर्माण, चटमोटकनिर्माण
गो-काक-पान-कीटपतंग–अतिथि पंचग्रास विधि।

प्रायोगिक- **(40अंक)**

उपनयनविधि, पंचगव्यनिर्माणविधि, मेखलानिर्माणप्रकार, भिक्षाचरणविधान, वेदारम्भ विधि
का प्रायोगिक अभ्यास। वरवरण, कन्यादान विधि, पाणिग्रहण विधि, अश्मारोहण, परिक्रमण,
सप्तवचनों का उच्चारण शाखोच्चार - (मंगलाष्टक) यतिगतिलयबद्ध उच्चारण की..शैली काअभ्यास।
मूलादिगण्डान्तशान्तिविधि का नक्षत्र स्थापन प्रायोगिक अभ्यास एवं अभिषेक विधि। नवजात शिशु के पैर
पूजा एवं प्रार्थना का प्रायोगिक ज्ञान।

सहायक ग्रन्थ -
1. शान्ति प्रकाश
2. षोडश संस्कार
3. उत्तरकर्म प्रयोग
4 श्राद्ध पारिजात्